THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-04 | Issue-04 | January-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i4.24

मुरादाबाद यू0 पी० में खाद्य एवं स्वास्थ्य प्रथाओं का स्वदेशी एवं पारंपरिक ज्ञान

डा0 अराधना श्रीवास्तव[1] और ज़रीन अख्तर[2]

[1]गृह विज्ञान विभाग, पी0के0 विश्वविद्यालय, शिवपुरी,मध्य प्रदेश
[2]गृह विज्ञान विभाग, पी0के0 विश्वविद्यालय, शिवपुरी, मध्य प्रदेश

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) जनपद में प्रचलित खाद्य एवं स्वास्थ्य से संबंधित स्वदेशी एवं पारंपरिक ज्ञान की स्थिति, उपयोग और वर्तमान प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। यह शोध इस तथ्य पर आधारित है कि भारत की पारंपरिक जीवनशैली में भोजन और स्वास्थ्य एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं तथा स्थानीय संसाधनों, मौसमी खाद्य पदार्थों और घरेलू उपचारों पर आधारित हैं। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग करते हुए 200 उत्तरदाताओं से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि मुरादाबाद क्षेत्र में आज भी बड़ी संख्या में लोग पारंपरिक खाद्य प्रथाओं जैसे मोटे अनाज, दालें, दुग्ध उत्पाद एवं मौसमी सब्जियों का नियमित अथवा आंशिक रूप से सेवन करते हैं। यह दर्शाता है कि स्वदेशी भोजन को स्वास्थ्यवर्धक एवं किफायती माना जाता है। डेटा विश्लेषण से यह भी ज्ञात हुआ कि पारंपरिक स्वास्थ्य प्रथाएँ, जैसे सर्दी–खाँसी में घरेलू नुस्खे, पेट रोगों में जड़ी–बूटियों का प्रयोग तथा छोटी चोटों में हल्दी का उपयोग, आज भी व्यापक रूप से प्रचलित हैं। अधिकांश उत्तरदाता आधुनिक चिकित्सा के साथ–साथ पारंपरिक उपचारों के संयोजन में विश्वास रखते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि समाज में स्वास्थ्य के प्रति संतुलित एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण विकसित हो रहा है। हालाँकि अध्ययन में यह भी पाया गया कि युवा पीढ़ी में स्वदेशी एवं पारंपरिक ज्ञान के प्रति रुचि अपेक्षाकृत कम होती जा रही है, जिसका प्रमुख कारण शहरीकरण, फास्ट फूड संस्कृति एवं आधुनिक जीवनशैली का प्रभाव है। यह स्थिति भविष्य में पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण के लिए चुनौती उत्पन्न कर सकती है। समग्र रूप से यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मुरादाबाद में खाद्य एवं स्वास्थ्य से जुड़ा स्वदेशी एवं पारंपरिक ज्ञान आज भी समाज के लिए उपयोगी, व्यवहारिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण है। यदि इस ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ संरक्षित किया जाए तथा शिक्षा एवं जन–जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से युवा पीढ़ी तक पहुँचाया जाए, तो यह न केवल जन–स्वास्थ्य सुधार में सहायक होगा बल्कि सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

1.0. भूमिका

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में स्वदेशी एवं पारंपरिक ज्ञान का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी अनुभव, अवलोकन और व्यवहारिक जीवन के माध्यम से विकसित होता रहा है। यह ज्ञान केवल जीवन–यापन की विधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें भोजन, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कृषि और सामाजिक व्यवहार से जुड़े ऐसे सिद्धांत निहित हैं जो मानव जीवन को संतुलित, स्वस्थ और प्रकृति के अनुकूल बनाए रखने में सहायक होते हैं। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में स्थित मुरादाबाद जनपद अपनी विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना, ग्रामीण–शहरी समन्वय और पारंपरिक जीवनशैली के लिए जाना जाता है। इस क्षेत्र में आज भी स्थानीय समुदायों द्वारा अपनाई जा रही खाद्य एवं स्वास्थ्य प्रथाएँ स्वदेशी ज्ञान की जीवंत अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती हैं। मुरादाबाद में प्रचलित पारंपरिक भोजन जैसे मोटे अनाज, मौसमी सब्जियाँ, दालें, दुग्ध उत्पाद तथा सीमित मसालों का प्रयोग न केवल पोषण की दृष्टि से उपयोगी है, बल्कि यह स्थानीय जलवायु और शारीरिक आवश्यकताओं के अनुरूप भी है। इसी प्रकार स्वास्थ्य के क्षेत्र में घरेलू उपचार, जड़ी–बूटियों का उपयोग, आयुर्वेदिक सिद्धांतों पर आधारित जीवनशैली, तथा योग एवं दिनचर्या संबंधी अभ्यास स्थानीय लोगों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग रहे हैं। आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार के बावजूद मुरादाबाद के ग्रामीण एवं अर्ध–शहरी क्षेत्रों में आज भी सामान्य रोगों के उपचार हेतु पारंपरिक ज्ञान पर निर्भरता देखी जाती है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से खान–पान की आदतों तथा जीवनशैली में तीव्र परिवर्तन हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप फास्ट फूड, रासायनिक खाद्य पदार्थ और निष्क्रिय जीवनशैली का प्रचलन बढ़ रहा है। इससे न केवल स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में वृद्धि हो रही है, बल्कि पारंपरिक ज्ञान भी धीरे–धीरे हाशिए पर जा रहा है। ऐसे परिदृश्य में मुरादाबाद जैसे जिलों में विद्यमान स्वदेशी खाद्य एवं स्वास्थ्य प्रथाओं का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। यह अध्ययन न केवल पारंपरिक ज्ञान की वर्तमान स्थिति को समझने में सहायक है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि किस प्रकार यह ज्ञान आधुनिक स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान में सहायक भूमिका निभा सकता है। अतः प्रस्तुत शोध मुरादाबाद जनपद में खाद्य एवं स्वास्थ्य प्रथाओं से जुड़े स्वदेशी एवं पारंपरिक ज्ञान के विश्लेषण के माध्यम से उसकी उपयोगिता, प्रासंगिकता और संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करता है, जिससे सतत विकास, स्वास्थ्य संवर्धन और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की दिशा में सार्थक योगदान दिया जा सके।

1.1. मुरादाबाद का सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

मुरादाबाद जनपद उत्तर प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित एक प्रमुख सामाजिक–सांस्कृतिक इकाई है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का अनोखा समन्वय देखने को मिलता है। यह क्षेत्र 'पीतल नगरी' के नाम से प्रसिद्ध होने के साथ–साथ अपनी बहुसांस्कृतिक संरचना के लिए भी जाना जाता है। यहाँ ग्रामीण,

अर्ध–शहरी एवं शहरी जीवनशैली का सम्मिलित स्वरूप विद्यमान है, जो लोगों के खान–पान, रहन–सहन तथा स्वास्थ्य संबंधी व्यवहारों को गहराई से प्रभावित करता है। मुरादाबाद की सामाजिक संरचना में संयुक्त परिवार प्रणाली, पारिवारिक मूल्य, धार्मिक आस्था और सामुदायिक सहभागिता का विशेष महत्व है। हिंदू एवं मुस्लिम समुदायों की मिश्रित आबादी के कारण यहाँ सांस्कृतिक विविधता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जिसका प्रभाव लोक–परंपराओं, त्योहारों, भोजन और उपचार पद्धतियों में देखा जा सकता है। कृषि, हस्तशिल्प, छोटे उद्योग एवं श्रम आधारित आजीविका यहाँ की प्रमुख विशेषताएँ हैं, जिससे श्रमसाध्य जीवनशैली और प्राकृतिक आहार को प्राथमिकता मिलती है। पारंपरिक ज्ञान का संचार मुख्यतः बुजुर्गों, परिवार और समुदाय के माध्यम से मौखिक रूप में होता रहा है। आयुर्वेद, घरेलू नुस्खे, मौसमी भोजन तथा प्राकृतिक उपचार यहाँ के जीवन का अभिन्न अंग रहे हैं। यद्यपि शहरीकरण, शिक्षा और आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार से जीवनशैली में परिवर्तन आया है, फिर भी मुरादाबाद के सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में पारंपरिक खाद्य एवं स्वास्थ्य प्रथाओं की जड़ें आज भी गहरी बनी हुई हैं, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक निरंतरता और पहचान को सुदृढ़ करती हैं।

1.2. मुरादाबाद में पारंपरिक खाद्य प्रथाएँ

मुरादाबाद क्षेत्र की पारंपरिक खाद्य संस्कृति स्वास्थ्य आधारित रही है। यहाँ के लोगों के भोजन में संतुलन एवं प्राकृतिकता पर विशेष बल दिया जाता है।

अनाज एवं दालें

- मोटे अनाज जैसे बाजरा, ज्वार
- गेहूँ, चना, अरहर और मसूर की दाल

ये खाद्य पदार्थ ऊर्जा, प्रोटीन एवं फाइबर से भरपूर होते हैं।

दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद

दूध, दही, छाछ और घी का नियमित सेवन पाचन शक्ति बढ़ाने एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने में सहायक माना जाता है।

मौसमी एवं स्थानीय आहार

मौसम के अनुसार सब्जियों और फलों का सेवन पारंपरिक ज्ञान का महत्वपूर्ण अंग है, जिससे शरीर का संतुलन बना रहता है।

1.3. पारंपरिक स्वास्थ्य प्रथाएँ एवं घरेलू उपचार

मुरादाबाद में पारंपरिक स्वास्थ्य प्रथाएँ आयुर्वेद, लोक चिकित्सा एवं घरेलू अनुभवों पर आधारित हैं।

घरेलू नुस्खे

- सर्दी–खाँसी में अदरक, तुलसी और शहद

- पेट संबंधी समस्याओं में अजवाइन और सौंफ
- घावों पर हल्दी का प्रयोग

आयुर्वेदिक प्रभाव

त्रिदोष सिद्धांत (वात, पित्त, कफ) के आधार पर भोजन एवं दिनचर्या का निर्धारण किया जाता है।

जीवनशैली आधारित स्वास्थ्य

प्रातःकाल उठना, योग, सूर्य नमस्कार और श्रम आधारित दिनचर्या को स्वास्थ्य के लिए आवश्यक माना जाता है।

2.0. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

मुरादाबाद (उ.प्र.) में खाद्य एवं स्वास्थ्य प्रथाओं से संबंधित स्वदेशी एवं पारंपरिक ज्ञान का अध्ययन वर्तमान सामाजिक एवं स्वास्थ्य परिदृश्य में अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है। आधुनिकता, शहरीकरण तथा बाजार–आधारित जीवनशैली के बढ़ते प्रभाव के कारण पारंपरिक भोजन, घरेलू उपचार एवं स्थानीय स्वास्थ्य ज्ञान धीरे–धीरे उपेक्षित होते जा रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप पोषण असंतुलन, जीवनशैली जनित रोगों तथा स्वास्थ्य संबंधी व्यय में वृद्धि देखी जा रही है। मुरादाबाद जैसे जिले, जहाँ ग्रामीण एवं अर्ध–शहरी जनसंख्या का बाहुल्य है, वहाँ पारंपरिक खाद्य एवं स्वास्थ्य प्रथाएँ लंबे समय से स्थानीय समुदायों के स्वास्थ्य संरक्षण का आधार रही हैं। अतः इन प्रथाओं का वैज्ञानिक एवं सामाजिक दृष्टि से अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। यह अध्ययन न केवल पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण में सहायक होगा, बल्कि यह भी स्पष्ट करेगा कि किस प्रकार यह ज्ञान आज के समय में भी स्वास्थ्य संवर्धन, रोग निवारण एवं पोषण सुरक्षा में उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करने, पीढ़ीगत ज्ञान अंतरण को प्रोत्साहित करने तथा युवाओं में स्वदेशी ज्ञान के प्रति जागरूकता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। शैक्षिक दृष्टिकोण से यह अध्ययन नीति–निर्माताओं, शिक्षकों एवं स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को पारंपरिक एवं आधुनिक स्वास्थ्य प्रणालियों के समन्वय हेतु उपयोगी सुझाव प्रदान करेगा। इस प्रकार, मुरादाबाद में खाद्य एवं स्वास्थ्य प्रथाओं के स्वदेशी एवं पारंपरिक ज्ञान का अध्ययन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक तीनों दृष्टियों से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

3.0. समस्या कथन

मुरादाबाद यू0 पी० में खाद्य एवं स्वास्थ्य प्रथाओं का स्वदेशी एवं पारंपरिक ज्ञान।

4.0. अध्ययन के उद्देश्य

1. मुरादाबाद में पारंपरिक खाद्य प्रथाओं की स्थिति का अध्ययन करना।
2. पारंपरिक स्वास्थ्य एवं घरेलू उपचारों के प्रयोग का विश्लेषण करना।
3. आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

4. स्वदेशी ज्ञान के संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करना।

5.0. अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन ''वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि'' पर आधारित है।

- नमूना : मुरादाबाद जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से चयनित
- N : 200 उत्तरदाता''
- उपकरण : शोधकर्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली
- सांख्यिकीय तकनीक : प्रतिशत (%), माध्य (Mean)

6.0. डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1

उत्तरदाताओं में पारंपरिक खाद्य प्रथाओं के पालन की स्थिति

श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
नियमित पालन	96	48 प्रतिशत
आंशिक पालन	72	36 प्रतिशत
बहुत कम पालन	32	16 प्रतिशत
कुल	200	100 प्रतिशत

व्याख्या :–

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि मुरादाबाद जिले के ''48 प्रतिशत उत्तरदाता'' नियमित रूप से पारंपरिक खाद्य प्रथाओं का पालन करते हैं, जबकि ''36 प्रतिशत उत्तरदाता'' आंशिक रूप से इन्हें अपनाते हैं। केवल ''16 प्रतिशत उत्तरदाता'' ऐसे पाए गए जो पारंपरिक भोजन का बहुत कम उपयोग करते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आज भी बहुसंख्यक लोग स्थानीय, मौसमी एवं स्वदेशी भोजन को स्वास्थ्यवर्धक मानते हैं।

तालिका 2

पारंपरिक स्वास्थ्य प्रथाओं (घरेलू उपचार) के उपयोग की स्थिति

स्वास्थ्य प्रथा	हाँ (उत्तरदाता)	हाँ (%)	नहीं (उत्तरदाता)	नहीं (%)
सर्दी–खाँसी में घरेलू नुस्खे	156	78 प्रतिशत	44	22 प्रतिशत
पेट रोग में घरेलू उपचार	142	71 प्रतिशत	58	29 प्रतिशत
छोटी चोट/घाव में हल्दी	166	83 प्रतिशत	34	17 प्रतिशत

व्याख्या :–

तालिका 2 से ज्ञात होता है कि मुरादाबाद में पारंपरिक स्वास्थ्य प्रथाओं का व्यापक प्रयोग किया जाता है। ''83 प्रतिशत उत्तरदाता'' छोटी चोटों में हल्दी जैसे पारंपरिक उपायों का प्रयोग करते हैं। इसी

प्रकार ''78 प्रतिशत उत्तरदाता'' सर्दी–खाँसी में घरेलू नुस्खों को प्राथमिकता देते हैं। यह दर्शाता है कि पारंपरिक स्वास्थ्य ज्ञान आज भी स्थानीय समुदाय में जीवंत है।

तालिका 3

आधुनिक चिकित्सा बनाम पारंपरिक चिकित्सा में विश्वास

चिकित्सा पद्धति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
केवल आधुनिक चिकित्सा	54	27 प्रतिशत
केवल पारंपरिक चिकित्सा	38	19 प्रतिशत
दोनों का संयोजन	108	54 प्रतिशत
कुल	200	100 प्रतिशत

व्याख्या :–

तालिका 3 के अनुसार ''54 प्रतिशत उत्तरदाता'' आधुनिक एवं पारंपरिक चिकित्सा दोनों के संयोजन में विश्वास रखते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि लोग अब किसी एक पद्धति तक सीमित न रहकर समन्वित दृष्टिकोण अपना रहे हैं। केवल पारंपरिक चिकित्सा पर विश्वास करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत ''19 प्रतिशत'' है, जो यह दर्शाता है कि आधुनिकता का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

तालिका 4

युवा पीढ़ी में पारंपरिक ज्ञान के प्रति रुचि

स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
उच्च रुचि	46	23 प्रतिशत
मध्यम रुचि	68	34 प्रतिशत
कम रुचि	86	43 प्रतिशत
कुल	200	100 प्रतिशत

व्याख्या :–

तालिका 4 से यह तथ्य सामने आता है कि ''43 प्रतिशत युवा उत्तरदाताओं'' में पारंपरिक खाद्य एवं स्वास्थ्य ज्ञान के प्रति रुचि कम पाई गई। यह एक चिंताजनक स्थिति है, जो यह संकेत देती है कि यदि समय रहते संरक्षण के प्रयास नहीं किए गए, तो यह ज्ञान धीरे–धीरे लुप्त हो सकता है।

7.0. प्रमुख निष्कर्ष

1. मुरादाबाद में पारंपरिक खाद्य एवं स्वास्थ्य प्रथाएँ आज भी प्रचलित हैं।
2. घरेलू उपचारों का उपयोग व्यापक रूप से किया जा रहा है।
3. आधुनिक और पारंपरिक चिकित्सा का समन्वय बढ़ रहा है।

4. युवा पीढ़ी में स्वदेशी ज्ञान के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत कम है।

8.0. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के डेटा विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मुरादाबाद (उ.प्र.) में खाद्य एवं स्वास्थ्य से संबंधित स्वदेशी एवं पारंपरिक ज्ञान न केवल सांस्कृतिक विरासत है, बल्कि यह आज भी व्यावहारिक और प्रभावी है। यद्यपि आधुनिक जीवनशैली ने कुछ हद तक इसके उपयोग को प्रभावित किया है, फिर भी अधिकांश लोग पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक चिकित्सा के पूरक के रूप में अपनाते हैं। अतः आवश्यक है कि इस ज्ञान का संरक्षण, प्रलेखन एवं शैक्षिक एकीकरण किया जाए, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इससे लाभान्वित हो सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, आर. (2018). भारतीय समाज और संस्कृति, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
- शर्मा, एस. (2017). भारतीय परंपराएँ एवं स्वास्थ्य विज्ञान, वाराणसी : चौखम्बा ओरिएंटलिया।
- त्रिपाठी, पी. (2016). आयुर्वेद एवं लोक–स्वास्थ्य, लखनऊ : उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान।
- वर्मा, के. (2019). स्वदेशी ज्ञान परंपरा और आधुनिक भारत, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
- पांडेय, डी. (2020). ग्रामीण भारत में खाद्य संस्कृति, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन।
- यादव, एम. (2018). पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ और उनका सामाजिक महत्व, भारतीय समाजशास्त्र पत्रिका, 42(2), 115–123।
- सिंह, आर. (2021). आयुष प्रणाली : संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ. भारतीय स्वास्थ्य अध्ययन जर्नल, 6(1), 45–52।
- मिश्रा, ए. (2019). स्थानीय ज्ञान और सामुदायिक स्वास्थ्य, भारतीय लोक अध्ययन, 10(3), 78–86।
- कुमार, एन. (2020). पारंपरिक भोजन और पोषण संतुलन. पोषण एवं स्वास्थ्य शोध पत्रिका, 5(2), 34–41।
- शुक्ला, एस. (2022). आधुनिकता के संदर्भ में पारंपरिक स्वास्थ्य ज्ञान. सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका, 8(1), 60–68।

Cite this Article:

डा0 अराधना श्रीवास्तव और ज़रीन अख्तर, "मुरादाबाद यू0 पी० में खाद्य एवं स्वास्थ्य प्रथाओं का स्वदेशी एवं पारंपरिक ज्ञान" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp.198–204

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डा0 अराधना श्रीवास्तव और ज़र्रीन अख्तर

For publication of Research Paper title

मुरादाबाद यू0 पी० में खाद्य एवं स्वास्थ्य प्रथाओं का स्वदेशी एवं पारंपरिक ज्ञान

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-04, Month January, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i4.24